Paper - I

MT

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - PRELIM - I - PAPER - I

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. (क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) एक - एक शब्द में उत्तर लिखिए। **2**

i) मई
ii) घोड़े पर
iii) वायु वेग से
iv) हिरन का

2) i) **समझकर लिखिए।** **1**

(1) पहाड़
(2) ईख के खेत
(3) ढाक के वन

ii) **विधानों के साथ सत्य / असत्य लिखिए।**

(1) असत्य ½
(2) असत्य ½

3) i) **निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए।**

(1) मृग - मृगी ½
(2) घोड़ा - घोड़ी ½

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।**

(1) समय × असमय ½
(2) अदृश्य × दृश्य ½

4) मूक जानवर देश की प्राकृतिक संपदा होते हैं । उनके कारण ही जंगलों की शोभा बढ़ती है । पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए हमें मूक जानवरों की रक्षा करनी चाहिए । यदि हम उनकी हत्या करेंगे तो उनका **2**

अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा । प्रत्येक जीव को इस धरती पर जीवन जीने का अधिकार है। हम किसी के भी अधिकार को छीन नहीं सकते हैं । यदि हम उनकी हत्या करते हैं, तो हम धर्म एवं कानून की नजर में बहुत बड़े अपराधी बन जाते हैं । दूसरों की रक्षा करना हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य होना चाहिए ।

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **समझकर लिखिए।**

(1) साहब की बेटी की बर्थ डे पार्टी। ½

(2) कुर्सियों आदि की व्यवस्था में डेकोरेटर्स की मदद की। ½

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) काले पत्थर से बना था। ½

(2) सींग की तरह नुकीली थी। ½

2) i) **उत्तर लिखिए।**

(1) काले पत्थर का गेंडा। ½

(2) जब उन्हें पता चला कि ड्राइंग रूप में लगी पेंटिग की कीमत दो लाख है । ½

ii) **सत्य / असत्य पहचान कर लिखिए।**

(1) असत्य ½

(2) सत्य ½

3) i) **रिक्त चौखट में उत्तर लिखिए।**

(1) फड़फड़ → फड़फड़ाहट ½

(2) भनभन → भनभनाहट ½

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।**

(1) सौभाग्य × दुर्भाग्य ½

(2) व्यवस्था × अव्यवस्था ½

4) संपन्न वर्ग अपनी झूठी प्रतिष्ठा एवं शान-शौकत समाज में प्रस्थापित करने हेतु तरह-तरह के मार्गों का अनुसरण करता रहता है। नई-नई गाड़ियाँ, बड़े-बड़े बँगले एवं जन्मदिन, सगाई व शादियों में ढेर सारा खर्च करना उसे अच्छा लगता है। अपने बँगले में अनावश्यक महँगी-महँगी चीजों का संग्रह करने में उसे बड़ा मजा आता है। ये सब कुछ वह दिखावे के लिए करता रहता है। इसके पीछे उसका एक ही मकसद होता है कि समाज में कुछ भी करके उसका रुतबा बढ़ जाए और सभी उसके सामने झुक जाएँ। **2**

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) समझकर लिखिए। **1**

i) सुंदर ii) महान

2) उत्तर लिखिए। **1**

i) गंगोत्तरी, (ii) यमुनोत्तरी, (iii) केदारनाथ, (iv) बदरीनाथ

3) शायद ही कोई ऐसा होगा जिसे अपने देश से प्यार न होगा। हमारा देश विश्व की प्राचीनतम संस्कृति वाला देश है। हमारी संस्कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है - अनेकता में एकता। प्रेम, भाईचारा, सत्य, अहिंसा, मानवता, आदर आदि गुण हमें हमारी संस्कृति ने दिए हैं। हमारी भाषा भी विश्व की सबसे प्राचीतम भाषा है। हिमालय पर्वत भारत की शान है। गंगा नदी भारत की सबसे बड़ी नदी है। विज्ञान एवं तकनीक में हमने ढेर सारी प्रगति कर ली है। विश्व की महान शक्ति के रूप में हम उभर रहे हैं। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

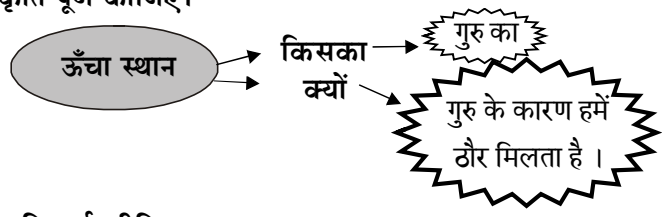

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

(1)

(2)

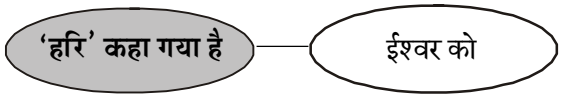

2) i) **पद्यांश पर आधारित दो प्रश्न तैयार कीजिए ।** **1**

(1) कबीर ने किसे अंध कहा है ?

(2) किसके रूठने पर हमें ठौर नहीं मिलता ?

ii) **उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

(1) कबीरा ते नर **अंध** है, गुरु को कहते और। ½

(2) हरि रूठे गुरु ठौर है **गुरु** रूठे नहिं ठौर ।। ½

3) i) **समानार्थी शब्द लिखिए।**

(1) नर - मनुष्य ½

(2) अंध - अज्ञानी ½

ii) (1) आँख न ऊठना (2) आँखे फाड़कर देखना **1**

4) कबीर जी कहते हैं वे लोग जो गुरु को महत्त्व नहीं देते वे अज्ञानी हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं कि ईश्वर के रूठ जाने से गुरु की शरण संभव है परंतु गुरु के रूठ जाने से कहीं भी शरण नहीं मिल सकती। **2**

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) **उत्तर लिखिए।**

i) **देश की बालकों से माँग** **1**

(1) खून से रंगा गुलाब दो।

(2) शत्रु को जवाब दो।

ii) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

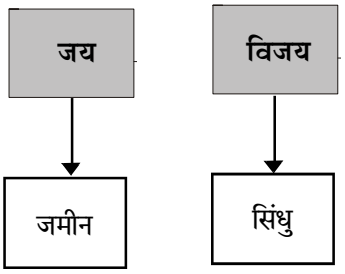

2) **सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :**

i) कवि ने बालकों को थामने के लिए कहा है **देश की मशाल को**। ½

ii) अब पिशाच के जाल को तोड़ने की जिम्मेदारी **शूरवीर बालकों की है**। ½

3) i) **पद्यांश में प्रयुक्त विरुद्ध अर्थ के शब्द लिखिए :**

(1) आसमान × जमीन ½

(2) लघु × विशाल ½

ii) **पद्यांश में आए विरामचिह्नों के नाम लिखिए :** **1**

(1) (!) विस्मयादिबोधक।

(2) (।) पूर्ण विराम।

4) कवि शूरवीर बालकों से कहते हैं कि इस विशाल भारत देश की रक्षा की जिम्मेदारी अब तुम्हारे कंधों पर आ गई है। शत्रुसमूह तुम्हारी हर गतिविधि पर नज़र रख रहा है। देश की सीमाओं पर भी दुश्मन की नजरें टिकी हुई हैं। तुम्हें दुश्मन की हर चाल को नाकाम करते हुए सरहदों की हिफाजत करनी है। जलसेना, थलसेना और वायुसेना इतनी सुदृढ़ हो कि दुश्मन बुरे इरादों से हमारे देश की तरफ देख भी न सके। देश के वीर सिपाहियों अपनी वीरता के बल पर दुश्मनों से अपने देश की आन-बान-शान को सुरक्षित बचाए रखना है। **2**

विभाग - 3 - पूरक पठन

उ.3. **पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **(4)**

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

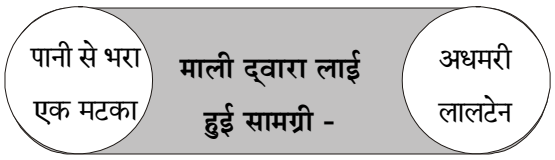

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

2) विदाई समारोह स्कूली बच्चों के लिए एक खुशी की दावत होती है। प्रेम व अपनत्व की भावना विदाई समारोह से उभरकर सामने आती है। जिस स्कूल में बचपन के दिन बीत गए, उस स्कूल से दसवीं के बाद कॉलेज जाते समय प्रत्येक छात्र का मन व्यथा से भर आता है। सभी एक-दूसरे को भावभीनी विदाई देते हैं। सभी छात्र एक-दूसरे के गले लगकर अपनत्व की भावना को प्रकट करते हैं। सभी छात्र अपने अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हैं। उन्हें पुष्प-गुच्छ देकर उनके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करते हैं। **2**

विभाग - 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** ½

संघर्ष - जीवन संघर्ष से भरा हुआ है ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए ।** ½

कर्तव्य - संज्ञा

2) **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए ।** 1

सबने आखिर चैन की साँस ली ।

3) i) **निम्नलिखित सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** ½

सकना - पंडित परमसुख की बात वे टाल न **सके** ।

ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** ½

गई (जाना) - सहायक क्रिया ।

4) **प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** 1

क्रिया	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्‌वितीय प्रेरणार्थक**
देखना	दिखाना	दिखवाना

5) i) **अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** 1

राम के अलावा वहाँ कोई नहीं था ।

ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** 1

अरे बाप रे ! विस्मयादिबोधक अव्यय

6) **कालपरिवर्तन कीजिए ।** 2

i) चपरासी खीझ जाता है ।

ii) दोनों चुपचाप चल रहे थे ।

7) i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** 1

नेत्र बेचकर चित्र खरीदना - बिना विचारे काम करना ।

वाक्य : विवाह की खरीददारी करते समय कई बार लोग **नेत्र बेचकर चित्र खरीदते हैं** ।

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** **1**

मानसून की वर्षा आरंभ हुई तब कहीं जाकर किसानों की **जान में जान आई** ।

विभाग - 5 - रचना

उ.**5.** **परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **5**

1) **निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।**

सौरभ तिवारी
गीता भवन, राजीव मार्ग,
पूना ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
सरस्वती विद्या मंदिर, शीतलगंज,
पूना ।

विषय : शिक्षक की नौकरी के लिए आवेदन पत्र ।

माननीय महोदय,

पिछले सप्ताह नवभारत टाइम्स में छपे एक विज्ञापन द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि आपके विद्यालय में हिंदी अध्यापक का पद खाली है । मैं उक्त पद के लिए आवेदन करना चाहता हूँ ।
मेरी शैक्षणिक योग्यता इस प्रकार है ।

1)	दसवीं परीक्षा	मार्च, 2009	(प्रथम श्रेणी)
2)	बारहवीं परीक्षा	मार्च, 2011	(प्रथम श्रेणी)
3)	बी.ए. परीक्षा	अगस्त, 2014	(द्वितीय श्रेणी)
4)	बी.एड.	अगस्त, 2016	(द्वितीय श्रेणी)

मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मैं एक योग्य व कुशल शिक्षक बनकर दिखाऊँगा । आप केवल एक बार अवसर देने का कष्ट करें ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

संलग्न प्रतियाँ:

1) दसवीं का प्रमाणपत्र एवं अंकतालिका ।
2) बारहवीं का प्रमाणपत्र एवं अंकतालिका ।
3) बी.ए. का प्रमाणपत्र एवं अंकतालिका ।
4) बी.एड. की डिग्री एवं अंकतालिका ।

भवदीय,
सौरभ तिवारी ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
सरस्वती विद्या मंदिर,
शीतलगंज,
पूना ।

प्रेषक,
सौरभ तिवारी,
गीता भवन,
राजीव मार्ग,
पूना ।

अथवा

दिवाकर कदम
सुंदरधाम,
गुड़गाँव ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
शास्त्री विद्यालय, शास्त्री नगर,
गुड़गाँव ।

विषय : मासिक शुल्क-माफ करवाने के लिए प्रार्थना पत्र ।

माननीय महोदय,

मैं आपके विद्यालय का दसवीं का छात्र हूँ । मैं इस विद्यालय में पाँचवीं कक्षा से पढ़ रहा हूँ और हमेशा कक्षा में प्रथम आता हूँ । मेरे परिवार में मेरे माता-पिता के अलावा तीन भाई-बहन हैं । परिवार की जीविका चलानेवाले मेरे पिताजी चार महीने पहले एक मोटर दुर्घटना में अपना दाहिना हाथ गँवा चुके हैं। नौकरी छूट गई है । परिवार में कोई दूसरा कमानेवाला नहीं है । सभी भाई-बहनों में मैं सबसे बड़ा हूँ । परिवार की आर्थिक दशा दयनीय है । पिछले दो महीने से मैंने मासिक शुल्क नहीं जमा किया है। मुझे नहीं लगता है कि मैं मासिक शुल्क जमा कर पाऊँगा ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि मेरी दयनीय आर्थिक स्थिति को देखते हुए मासिक शुल्क माफ करने की कृपा करें ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

आपका आज्ञाकारी छात्र,
दिवाकर कदम ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
शास्त्री विद्यालय,शास्त्री नगर,
गुड़गाँव ।

प्रेषक,
दिवाकर कदम,
सुंदरधाम,
गुड़गाँव ।

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए । 5

बुद्धिमान ईश्वर

एक व्यापारी कई सालों से गाँव-गाँव घूमकर व्यापार करता था । जब कभी वह थक जाता तो किसी बड़े पेड़ की छाँव में विश्राम करता, वहीं खाना खाता और फिर दूसरे गाँव के लिए रवाना हो जाता । कई बार वह यह सोचकर मन ही मन बहुत प्रसन्न होता था कि उसके जैसा बुद्धिमान कोई नहीं है ।

एक बार वह सदैव की भाँति व्यापार के लिए घर से निकला । दो-६चार गाँव घूमने पर वह थक गया । उसने थोड़ी दूर पर एक तालाब देखा । उसके पास एक बहुत बड़ा आम का पेड़ भी था । उसने उसी पेड़ के नीचे विश्राम करने का निश्चय किया । अपने साथ लाया हुआ भोजन खा कर उसने ठंडा पानी पिया और पेड़ के नीचे ठंडी छाँव में विश्राम करने लगा । अचानक उसकी नजर पेड़ पर पड़ी । उसमें आम के कच्चे फल लगे हुए थे । व्यापारी विचार करने लगा कि 'ईश्वर भी बड़ा विचित्र है, उसने इतने बड़े पेड़ पर छोटे फल क्यों लगाए ? बड़े पेड़ पर तो बड़े फल होने चाहिए । छोटी-छोटी लता पर तरबूज और खरबूज जैसे बड़े-बड़े फल लगते हैं । कितनी अजीब बात है।' तभी अचानक एक आम उसके सिर पर गिरा और सारी बात उसकी समझ में आ गई ।

उसने ईश्वर से क्षमा माँगी और सोचने लगा कि यदि इस वृक्ष पर बड़ा फल लगा होता और वह मेरे सिर पर गिरा होता तो मैं मर जाता । ईश्वर ही सबसे बुद्धिमान है। वह जो करता है, सोच-समझकर ही करता है ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि भगवान जो भी कार्य करता है, वह सोच- समझकर ही करता है । अत: उस पर हमें पूर्ण रूप से विश्वास करना चाहिए ।

3) निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनका उत्तर एक वाक्य में लिखा जा सके । 5

(1) स्वामीजी ने हिंदी के माध्यम से कौन-कौन से विषयों की शिक्षा दी ?
(2) स्वामी श्रद्धानंद कौन थे ?
(3) गुरुकुल काँगड़ी के बारे में अंग्रेजों की क्या मान्यता थी ?
(4) गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों की क्या विशेषता थी ?
(5) स्वाधीनता से चालीस साल पहले स्वामी श्रद्धानंद ने क्या साबित कर दिया था ?

उ.6. **1) विज्ञापन लेखन :- (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** **5**

सभ्यता - संस्कृति की है, सिर्फ एक पहचान
भारत-भारती खादी
हम सबकी आन-बान और शान !

आयोजक -

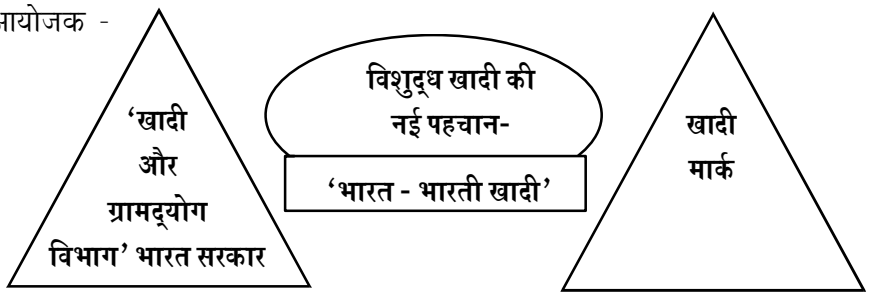

प्रदर्शनी एवं बिक्री
राम-रतन मैदान, वरली मुंबई - 16
प्रात:10.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक
गांधीजी का स्वप्न साकार करें

2) **स्वमत :- (60 से 80 शब्दों में)** **5**

सूखा या अकाल प्राकृतिक आपदा का रूप होता है । जब किसी प्रदेश में दो-तीन वर्षों तक बरसात नहीं होती है तो वहाँ का भू-भाग अकाल की चपेट में आ जाता है । बरसात न होने के कारण जमीन में दरारें पड़ जाती हैं । पेड़ भी इस सूखे की चपेट में आ जाते हैं । वे भी सूख जाते हैं । उन पर एक भी पत्ता दिखाई नहीं देता है । मनुष्य ही क्या पशु-पक्षियों की भी स्थिति दयनीय हो जाती है । इस सूखे के कारण सभी चाहे वो मनुष्य हों या प्राणी हों अपने प्रदेश को छोड़कर कहीं और चले जाते हैं । आजकल अकाल जैसी प्राकृतिक आपदा का सामना सभी को करना पड़ रहा है । विश्व में वृद्धि हो रही है, अत: मनुष्य को प्राकृतिक आपदाओं के साथ संघर्ष करना पड़ रहा है । इस आपदा से बचने के लिए पेड़ लगाने चाहिए ।

3) **किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- (60 से 80 शब्दों में)** **5**

1) **पुस्तक की आत्मकथा**

मेरी नीली जिल्द पर अंकित सुनहरे अक्षर देखकर मेरा जीवन - वृत्तांत सुनने के लिए आप बहुत उत्सुक हो रहे हैं । तो सुनिए ।

मुझे यह सुंदर शरीर और मनोहर रूप प्रदान करने का श्रेय मेरे प्रकाशक को है । एक अध्ययनशील व्यक्ति ने मुझे तैयार किया था । उन सज्जन को विद्यार्थी जीवन से ही विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ने का शौक था । उनकी एक और विशेषता थी । वे प्रत्येक पुस्तक से प्रेरक एवं प्रभावोत्पादक वाक्य अथवा कविता की पंक्तियाँ एक कापी में लिख लेते थे । धीरे - धीरे उनके पास सुभाषितों का एक बड़ा संग्रह तैयार हो गया । इसी संग्रह में से छाँटकर मेरा निर्माण किया और नामकरण किया - 'सुभाषित रत्नावली' । इसके बाद उन्होंने मुझे एक प्रकाशक को सौंप दिया । प्रकाशक महोदय मुझे पाकर खुश हो गए और बोल उठे -''मैं इसी प्रकार की पुस्तक प्रकाशित करना चाहता था ।'' उन्होंने मुझे छापा, सजा - धजा कर मनोहर रूप प्रदान किया और

कुछ ही समय के भीतर मेरी हजारों प्रतियाँ बेच डालीं । उन्हीं प्रतियों में से मैं एक हूँ ।

आपके पिता जी ने मेरा मनोहर रूप देखकर मुझे खरीदा था । जब उन्होंने मेरे सुभाषित पढ़े, तो उनका आह्लाद कई गुना बढ़ गया । उन्होंने मुझ पर आवरण चढ़ाया और बड़ी सावधानी से मुझे अपनी पुस्तकों की आलमारी में रख दिया । उनकी देख - रेख के फलस्वरूप ही मेरा रूप - रंग आज भी पूर्ववत बना हुआ है ।

यों तो मैं सुभाषितों का संग्रह मात्र हूँ, किंतु ये सुभाषित कई महान हस्तियों के अमूल्य उद्गार हैं । मेरे कुछ पृष्ठ पलटते ही तुम्हें इस बात की जानकारी हो जाएगी । जब लोग उद्विग्न या उदास होते हैं, तब मुझे उठाकर मेरे पन्ने पलटने लगते हैं और फिर कोई प्रेरणादायक सुभाषित पढ़कर शक्ति और उत्साह से भर उठते हैं । जब मैं देखती हूँ कि मैं लोगों के लिए रामायण और महाभारत जैसे महान ग्रंथों की तरह प्रेरणास्रोत बन सकी हूँ, तब मुझे परम सुख होता है और अपनी उपयोगिता पर गर्व होने लगता है ।

एक दिन मैं बड़ी मुसीबत मैं फँस गई थी । आपके पिता जी की अनुपस्थिति में एक छोटे बच्चे ने मुझे आलमारी से निकाल लिया । तत्पश्चात, पिता की नकल करते हुए शाल ओढ़कर और मुझे गोद में लेकर आरामकुर्सी पर बैठ गया । उसी समय उसकी छोटी बहन भी वहाँ आ पहुँची । दोनों मिलकर तेजी से मेरे पन्ने पलटने लगे । मुझे डर लग रहा था कि आज मेरा अंग - भंग होकर ही रहेगा । इतने में सौभाग्य से उनकी माता जी वहाँ आ गईं । मेरी दुर्दशा होते देखकर उन्होंने उन दोनों को डाँटा और मुझे उनके हाथों से लेकर फिर से आलमारी में रख दिया । आज भी उस घटना की याद आने पर मैं काँप उठती हूँ ।

मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूँ कि एक सहृदय स्वामी ने मुझे अपने संग्रहालय में आश्रय दिया है ।

2) **यदि संगणक न होता** **5**

आज दुनिया संगणक के हाथ में हैं । आने वाला युग संगणक का युग होगा । संगणक मानव मस्तिष्क की एक अद्भुत खोज है । इसे चमत्कारों का खजाना कहा जाए, तो अतिशयोक्ति न होगी । आज मनुष्य की जिज्ञासा ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में जो क्रांति की है, उसके केंद्र में संगणक का महत्त्वपूर्ण योगदान है ।

आज हालत यह है कि संगणक मनुष्य का स्थानापन्न बन गया है । मनुष्य जटिल समस्याओं का हल खोजने के लिए संगणक का मुँह जोहता दिखाई देता है । जो काम मनुष्य नहीं कर सकते, वे सारे काम बिना त्रुटि संगणक कर रहा है ।

कुछ विभाग तो संगणक पर इस कदर निर्भर हो चुके हैं कि संगणक (सर्वर) में किसी तरह की गड़बड़ी आते ही उनका काम ठप हो जाता है । रेल आरक्षण, बैकों का लेन - देन, पोस्ट आफिस का काम - काज आदि संगणक पर ही आधारित है ।

ऐसी हालत में यह कल्पना ही नहीं की जा सकती कि संगणक न हों ।

संगणक आज हमारे दैनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है ।

यदि संगणक न होता तो रेल टिकट, आरक्षण तथा बैंकों, कारखानों, प्रयोगशालाओं, शोध संस्थानों, अस्पतालों विभिन्न कार्यालयों, पुस्तकालयों, खेल, विज्ञान, समाचारपत्रों, मुद्रण कला, विभिन्न चैनलों आदि का काम जितनी तेजी से हो रहा है, उतनी तेजी से न हो पाता ।

आज के जमाने में यह कल्पना बिलकुल नहीं की जा सकती कि संगणक न हों । बल्कि संगणक में नित नवीन शोध हो रहे हैं और संगणक की नई - नई पीढ़ियाँ आती जा रही हैं । अब वह दिन दूर नहीं, जब संगणक वे सारे काम करने लगेगा, जो मनुष्य कर रहा है । वैसे अधिकांश कार्य आज रोबोट कर ही रहा है ।

❖❖❖❖